MahayogiGorakhnath Krishi Vigyan Kendra, Chauk Mafi (Peppeganj), JangalKaudiya Gorakhpur, Uttar Pradesh-273165
Email: gorakhpurkvk2@gmail.com

दिनांक 23 मार्च 2018 को महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र की प्रथम वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक दिग्विजय नाथ इंटर कॉलेज के प्रांगण में आयोजित की गयी ।बैठक की अध्यक्षता डॉ प्रदीप राव, प्रधानाचार्य, महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगल धूसड़ तथा सदस्य सचिव के रूप में डॉ आर.पी. सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष,महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र तथा सदस्य के रूप में, डॉ. यू. एस. गौतम, निदेशक अटारी कानपुर, डॉ. डी. पी. सिंह, प्रतिनिधि, निदेशक प्रसार एन. डी. यू. ए. टी. कुमारगंज फैजाबाद उत्तर प्रदेश, डॉ. (प्रो.) पी.के. सिंह उद्यान,एन. डी. यू. ए. टी. कुमारगंज फैजाबाद उत्तर प्रदेश, डॉ. रणजीत सिंह प्रोफेसर फसल विज्ञानं (सेवानिवृत्त),एन. डी. यू. ए. टी. कुमारगंज फैजाबाद उत्तर प्रदेश, श्री संजय सिंह उप निदेशक कृषि गोरखपुर / सचिव आत्मा, डॉ. यू. पी. सिंह अपर निदेशक, पशुपालन विभाग गोरखपुर, वरिष्ठ प्राविधिक सहायक, भूमि संरक्षण, गोरखपुर, श्री उग्रसेन सिंह, परियोजना निदेशक उ०प्र० बीज विकास निगम, गोरखपुर शामिल हुए ।इसके साथ ही साथ प्रगतिशील कृषक श्री मृत्युंजय सिंह प्रधान बढ़या चौक, श्री दिनेश कुमार निषाद, प्रधान रनाहडीह, श्री रविन्द्र कुमार सिंह, श्रीमती नोहरा देवी एवं श्रीमती ममता आदि इस बैठक में सम्मिलित हुए । इस प्रथम बैठक में सदस्य सचिव डॉ. आर.पी. सिंह द्वारा संक्षेप में वर्ष 2017-2018 का प्रगति प्रतिवेदन एवं वर्ष 2018-19 की कार्ययोजना प्रस्तुत की गयी। इसी क्रम में केन्द्र के सभी छः विषय वस्तु विशेषज्ञों (डॉ. विवेक प्रताप सिंह-पशुपालन, श्री अवनीश कुमार सिंह-सस्य विज्ञान, श्री संदीप प्रकाश उपाध्याय-मृदा विज्ञान, डॉ. अजीत कुमार श्रीवास्तव-उद्यान विज्ञान, डॉ. राहुल कुमार सिंह-कृषि प्रसार एवं डॉ. प्रतीक्षा सिंह-गृह विज्ञान) के द्वारा अपने-अपने विषय की विस्तृत प्रगति प्रतिवेदन एवं कार्य योजना प्रस्तुत की गयी ।जनपद में कृषकों की आय बढ़ाने हेतु नवीनतम कृषि तकनीकी के प्रचार-प्रसार हेतु निम्नलिखित सुझाव अध्यक्ष महोदय एवं सदस्यों के द्वारा दिए गए।

1. डॉ पी के सिंह प्रोफेसर (उद्यान) एन. डी. यू. ए. टी. कुमारगंज फैजाबाद उत्तर प्रदेश -

- नवसृजित महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र के कार्यों की प्रशंसा करते हुए डॉ. सिंह ने कहा कि कृषि विज्ञान केन्द्र कार्यों को निष्ठा पूर्वक कर रहा है।
- डॉ. सिंह ने जंगली जानवरों मुख्यतः नील गाय से छुटकारा पाने के लिए कहा कि इसके लिए प्राकृतिक फेंसिंग की व्यवस्था करनी चाहिए, जिसके लिए जंगल जलेबी नामक

जंगली वृक्ष का उपयोग किया जा सकता है जंगल जलेबी लगभग 2-3 सालों में बाउंड्री की तरह फैल जाती है और सुरक्षा प्रदान करती है।

- एग्रोफोरेस्ट्री सिस्टम अपनाने पर जोर दिया, और कहा कि सागौन और पॉपुलर जैसे वृक्षों को फार्म पर लगवाना चाहिए।
- डॉ. सिंह द्वारा आम व अमरुद के पुराने बागों में हल्दी व अदरक की खेती कराने पर जोर दिया गया। उन्होंने यह भी बताया कि आम के पुराने बागों में हल्दी फसल लगाना एक फायदेमंद कृषि कार्य है। इसके साथ ही साथ उन्होंने बंडा व जिमीकंद लगाने पर जोर दिया।
- जिला गोरखपुर लो-लैंड के अंतर्गत आता है इसलिए यहां पर वही फसलें उगायी जाय जो इस जिले में सही से उत्पादकता दे सके। कोलोकेसिया प्रजाति की फसलों का प्रचार प्रसार कर किसानों को इससे होने वाले लाभ के बारें में बताया जाय।
- गृह विज्ञान व उद्यान विभाग का कार्य एक जैसा है इसलिए दोनों विभाग मिल कर कार्य करें। जिससे फल व सब्जी के उत्पादन के साथ प्रसंस्करण भी हो सके।

2. डॉ रणजीत सिंह (रिटायर्ड प्रोफेसर पादप प्रजनन एवं आनुवांशिकी)

- डॉ. सिंह ने कहा कि बीज उत्पादन, बीज की बिक्री का कार्य केवीके शुरू कर दे जिससे किसानों को अच्छी प्रजाति का बीज मिल सके और वे अपनी आय दोगुनी कर सके।
- क्रॉप कैफेटेरिया बनाएं, छोटे छोटे प्लाट में विभिन्न प्रजाति के बीज लगाएं।
- Buyback system अपनाएं (किसानों को बीज उपलब्ध कराकर बीज उत्पादन कराएं तथा बीज उत्पादन कंपनी या एन.एस.सी. से लिंक करायें जिससे किसानों की आय नियमित बढ़ सके)
- अभिजनक बीज को प्रोत्साहित करें।
- बीज की उपलब्धता सीजन शुरू होने से पहले ही करें तथा किसानों तक इसका प्रचार प्रसार भी हो।
- किसी एक गांव को चुने जिसमें सारी तकनीकी मशीन, बीज, उद्यानिकी आदि प्रदान करें फिर उस गांव का potencial yield, demonstration yield etc निकालें। दिए गए तकनीकी की post test करें। ताकि pre & post test दिखाकर किसानों के सामने मॉडल गांव प्रस्तुत करें।

3. श्री संजय सिंहउप निदेशक कृषि / सचिव आत्मागोरखपुर

- श्री सिंह ने कहा कि वे केवीके के वैज्ञानिकों की कृषि विभाग के साथ सहभागिता एवं उपस्थिति से संतुष्ट हैं जिसके लिए उन्होंने टीम को बधाई दी।
- किसानों में जागरूकता फैलाने व बदलाव लाने पर जोर दिया तथा के.वी.के. से सहयोग की अपेक्षा की ।
- श्री सिंह ने कहा कि प्रबंधन तकनीकी अपनाएं जिससे कम लागत (उर्वरक, संसाधन, पानी) में अधिक उपज पैदा करें तभी किसानों की आय को दोगुना किया जा सकता है।
- श्री सिंह ने कहा कि कृषि विभाग कुछ कृषि उपकरणों पर अनुदान दे रहा है। किसानों तक लाभ पहुंचे इसके लिए सहयोग की अपेक्षा की।
- मूल्य संवर्धन पर ध्यान देते हुए डॉक्टर सिंह ने कहा कि गृह वैज्ञानिक मूल्य संवर्धन कर महिला किसानों की आय बढ़ा सकती हैं।
- श्री सिंह ने कहा कि जलवायु में परिवर्तन के अनुसार प्रजाति का निरीक्षण कर ही किसानों को जानकारी दें।

4. डॉ यू पी सिंह, अपर निदेशक पशुपालन गोरखपुर
   - डॉक्टर सिंह ने कहा कि केवीके संबंधित विभागों के साथ मिलकर आय दोगुनी करने के लक्ष्य को पा सकता है।
   - इसके लिए विभिन्न विषयों जैसे पशुपालन गृह विज्ञान तथा उद्यान आदि को मिलकर काम करना होगा।
   - वर्तमान में प्रदेश में दीनदयाल उपाध्याय संस्थान द्वारा 27-28 मार्च को मेला का आयोजन खोराबार में किया गया है इसमें केवीके की उपस्थिति से उन्हें फायदा होगा।
   - उन्होंने कहा कि केवीके गांव चिन्हित कर बताए पशुपालन विभाग वहां अपनी सेवा देगा व जितना हो सकेगा केवीके के साथ मिलकर काम करेगा।
   - चारे की कमी से निपटने के लिए एक या दो हेक्टेयर को चारागाह के रूप में विकसित करें। जौ, बहुवर्षीय घास, प्रदर्शन के रूप में लगाएं जिससे चारा भी उपलब्ध और किसानों को जानकारी भी मिले । इसके लिए झांसी ग्रासलैंड आदि संस्थानों से मदद लें।
   - गोरखपुर की परिस्थिति में बकरा पालन पर कार्य करें, जिसके लिए उन्नत प्रजाति के बकरे- जमुनापारी बरबरी आदि का उपयोग करें इससे दूध की भी उपलब्धता रहेगी।
   - पशुओं में टीकाकरण को बढ़ावा दें तथा गांवों में जनजागरण कार्य किये जाय।
   - किसानों को पशुधन बीमा योजना के विषय में बताएं और प्रोत्साहित कर पशुओ का बीमा करवाए। गांव चिन्हित कर योजना किसानों तक पहुंचाएं जिसमें वे साथ देंगे ।
5. डॉ विनोद सिंह (गेहूं अभिजनक एन डी यू ए टी फैजाबाद)

- BGRI प्रोजेक्ट गोरखपुर में लागू कराया जाए इसके लिए यथासंभव प्रयत्न किए जाएं।
- गेहूं की DBW-71,107 प्रजाति को किसानों को वितरित की जाय।
- उन्होंने कहा कि Crop Monitoring के दौरान AVT ट्रायल सर्वश्रेष्ठ था।
- Crop Cafeteriaमें 10 साल से पुरानी प्रजाति ना ली जाय ।
- SAC बैठक में Soil Water Conservation विभाग से भी एक व्यक्ति नामित हो।

6. श्री उग्रसेन सिंह ; परियोजना निदेशक उ.प्र. बीज विकास निगम

- श्री सिंह ने कहा कि केवीके उनके विभाग से बीज लेकर परिक्षण करें तथा उपयुक्त प्रजाति का बीज उत्पादन करे तहत बीज विकास निगम इस उत्पादित बीज को के.वी.के. से खरीद लेगा तथा अपने विभाग से बिक्री कर लेगा ।

7. श्री राजमन यादव (वरिष्ठ प्राविधिक सहायक), भूमि संरक्षण विभाग

- श्री यादव ने किसानों द्वारा फसल अवशेष जलाए जाने पर गहरी चिंता व्यक्त की और यह सुझाव दिया कि यदि मृदा वैज्ञानिक के सहयोग से मृदा का परीक्षण (फसल जलाने के पहले व बाद) कर किसानों को नुकसान के बारे में बताकर खेत में अवशेष जलने की प्रथा को रोका जा सके ।

8. **डॉ०यू०एस० गौतम,निदेशक,भाकृअनुप-कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान, संस्थान (अटारी) कानपुर** ।

- कृषि विज्ञान केन्द्र के वार्षिक योजनाकार में प्रक्षेत्र परीक्षण या ऑन फॉर्म ट्रायल (OFT) तथा अग्रिम पक्तिं प्रदर्शन (FLD) आदि की योजना बनाई गई है, उसके साथ-साथ वैज्ञानिकों को उसके अतिरिक्त भी काम करना होगा, जिससे किसानों की आय में वृद्धि हो सके।
- वैज्ञानिकों का कार्य जनपद की विभिन्न सूक्ष्म कृषि प्रणालियों के अनुसार किसानों की जरूरत को देखते हुए उचित तकनीकी को पहुंचाना हैं ।
- गृह विज्ञान में पोषाहार वाटिका के लिए **भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी** से बीज उपलब्ध करावें एवं महिलाओं के इसके महत्व के बारें में भी बतायें ।
- जो 10 गांव गोद लिए है उनका PRA (Participatory Rural Appraisal) हो तथा उसी के आधार पर कार्ययोजना बनायें ।

- कृषि विज्ञान केन्द्र पर एकीकृत कृषि प्रणाली (Integrated Farming System/IFS) में पशुपालन के साथ-साथ बकरी पालन, मुर्गी पालन इत्यादि को प्रदर्शन लगायें एवं किसानों को उसका महत्व बताते हुए प्रोत्साहित करें। गोद लिए गांवों में भी इसका प्रसार करें।
- प्रक्षेत्र परीक्षण या ऑन फॉर्म ट्रायल (OFT) तथा अग्रिम पक्तिं प्रदर्शन (FLD) के लिए भी मृदा नतीजों का उपयोग करें। परीक्षणोपरान्त प्राप्त नतीजों को रिकॉर्ड में लाएं तथा जो भी ऑन फॉर्म ट्रायल (OFT) करें वह पोषण तत्वों पर आधारित हो । सूक्ष्म पोषक तत्वों की पहचान करें व उसी के अनुसार तत्वों का प्रयोग करें तथा इससे होनें वाले प्रभावों जैसे उर्वरकों की बचत आदि को किसानों से अवगत करायें तथा इसके साथ ही साथ इसके परिणाम को केवीके की वेबसाइट पर दर्शाए।
- उद्यान वैज्ञानिक के लिए डॉ० गौतम ने कहा कि कृषि वानिकी मॉडल यथास्थान पर अर्थात् जहां आवश्यक हो (ICAR-CAFRI, Jhansi से कंसल्ट कर के या जानकारी लेकर) उस पर प्रक्षेत्र परीक्षण या ऑन फॉर्म ट्रायल (OFT/FLD) करें । केले की खेती गोरखपुर के कैम्पियरगंज में की जाती है उसके प्रबंधन पर काम करें, केले के साथ मिर्च को सह-फसल की फसल रूप में लगाएं, जैसा कि प्रदर्शन में बताया गया कि इसका परिणाम अच्छा है। जिससे कि किसानों की आय में वृद्धि हो सके।
- डॉ० गौतम ने कहा कि गृह वैज्ञानिक व अन्य वैज्ञानिक साथ मिलकर स्वयं सेवी समूह (SHG) के साथ काम करें । गृह वैज्ञानिक केले से फाइबर निकालने की तकनीकी पर काम करें तथा इसका प्रशिक्षण महिलाओं को दें व कृषकों की आय बढ़ाने पर कार्य करें। प्रतापगढ़ केवीके के स्वंय सेवी समूह (SHG) के कार्यों का उदाहरण देते हुए डॉ० गौतम ने कहा कि उनके कार्यों को देखें और आवश्यकतानुसार उसे अपनायें भी। अगरबत्ती, केले के रेशे (फाइबर) निकालना, मूल्य संवर्धन, खाद्य संवर्धन आदि तरीकों से स्वंय सेवी समूह (SHG) की महिलाओं के साथ अच्छा काम करें, व उनकी आय बढ़ाएं इससे 2022 तक किसानों की आय दोगुनी करने का लक्ष्य भी सुनिश्चित होगा।
- डॉ० गौतम ने कहा कि किसानों को फसल को सही समय पर लगाने की सलाह दें व तकनीकी विधि से फसल लगवाएं इससे उत्पादन में वृद्धि होगी । डेटाबेस (रिकॉर्ड) इकट्ठा करें कि गोरखपुर में कहाँ-कहाँ फसल समय पर लगायी जाती है व कहाँ-कहाँ देर से लगायी जाती है, उस का विश्लेषण करके प्लान (योजना बनायें) करें । इसके लिए जनपद में कृषि विभाग के विषय वस्तु विशेषज्ञ (एटीएम) व ब्लाक तकनीकी प्रबंधक

(बीटीएम) से मदद ले सकते हैं। उन्होंने कहा कि जनपद की नीतियों में केवीके अपना वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है उसमें सहयोग दें। जनपद के अनुकूल तकनीकी को बढ़ावा दें। टपक-सिंचाई प्रणाली को बढ़ावा दें। कृषि विभाग के साथ मिलकर काम करें व सहभागिता (Convergence) का उदहारण प्रस्तुत करें। किसानो को प्रधानमंत्री बीमा सुरक्षा योजना की जानकारीं दें तथा उसे अपनाने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करें।

- पशुपालन के विषय में डॉ० गौतम ने कहा की पूरे वर्ष उगने वाले (अर्थात् बारहों माह में उपलब्ध) चारे का प्रदर्शन करें तथा किसानों के खेतों पर सम्बन्धित मॉडल तैयार करें।
- एक प्रक्षेत्र में त्रि-स्तरीय फसल वाली तकनीकी केवीके पर शुरू करें।
- बांस की खेती का प्रसार करें तथा मेले में प्रदर्शनी के लिए ऊपयोग कर सकते है। उदाहरण के बहुप्रचलित लोटा बांस, (बांस की प्रजाति) को बढ़ावा दे सकते हैं, जो किसानों की आय को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो सकता है।
- डॉ० गौतम ने कहा की हर वैज्ञानिक की दो-दो ट्रेनिंग व सेमिनार की सूची बनाकर अटारी कानपुर भेजा जाय जिससे हर वैज्ञानिक की दो-दो ट्रेनिंग व सेमिनार एक वर्ष में कराया जाना सुनिश्चित किया जा सकें।
- डॉ० गौतम ने कहा कि कृषि प्रसार व गृह विज्ञान का काम सबसे ज्यादा है वे हर वैज्ञानिक के साथ मिलकर काम कर सकते हैं।

9. डॉ. प्रदीप राव अध्यक्ष वैज्ञानिक सलाहकार समिति ने निम्नलिखित सुझाव दिये-

- डॉ राव ने कहा कि कृषि के क्षेत्र की सरकार की योजना को शत-प्रतिशत किसानों की जमीन पर लाने के लिए इस कृषि विज्ञान केन्द्र का निर्माण किया गया है।
- डॉ राव ने निर्माण कार्य पर प्रतिक्रिया में कहा कि निर्माण में काफी समय लग रहा है। इसे कम से कम समय में ख़त्म करें। लक्ष्य निर्धारित कर पूरा करें।
- डॉ. राव ने presentation व उसकी प्रति एक जैसी न होने पर आपत्ति जताई और कहा कि दोनों में एकरूपता सुनिश्चित करने को कहा।
- उन्होंने कहा कि केवीके को दिखाना होगा की केवीके आने से पहले आस-पास में कृषि कैसा था व केवीके के आने से क्या बदलाव आया है। इस केवीके को देखने लायक बनाये, इस दिशा में काम करें।

- उन्होंने कहा की पहले 10 गोद लिए हुए गावों में कृषि व अन्य कार्यों में परिवर्तन लाएं फिर पूरे 9 ब्लाकों में परिवर्तन करें तभी के.वी.के. का वास्तविक औचित्य है।
- कृषि विज्ञान केन्द्र की वेबसाइट के लिए उन्होंने कहा कि, अभी तक वेबसाइट काम नहीं कर रही उसे सही कर के.वी.के. के कार्यक्रम उस पर अपलोड करें।
- डॉ. राव ने के.वी.के. को साहित्य प्रकाशन जैसे folder , pamphlet, पत्रिका आदि शुरू करने को कहा।
- उन्होंने कहा की SAC बैठक की कार्यवाही लिखी जाय उसे सभी सदस्यों को दिया जाय और सभी की राय लेकर इसी आधार पर अगले वित्तिय वर्ष की कार्य की रूपरेखा निर्धारित की जाय।
- डॉ राव ने कहा की लक्ष्य निर्धारित कर कार्य करें, स्वंत्रता से कार्य करें, संस्था को इससे लाभ नहीं चाहिए परन्तु जिस लक्ष्य के साथ के.वी.के. बनाया गया है वह पूरा होना चाहिए। इस के.वी.के. को सर्वोत्तम के.वी.के. बनायें। नवीनतम तकनीकी से किसानों को फायदा होना चाहिए।
- डॉ. राव ने कहा कि लक्ष्य निर्धारित करें कि कब तक इस के.वी.के. को सर्वश्रेष्ठ बनायेंगे, निर्धारित समय में कार्य पूरा करें।

10. श्री मृत्युंजय सिंह- प्रधान बढ़या चौक

- श्री सिंह ने यह आग्रह किया की के.वी.के. के माध्यम से समय से बीज उपलब्ध हो जिससे किसान समय से बीज बो सके।
- श्री सिंह ने IFS मॉडल में मछली पालन शामिल करने का आग्रह किया।

11. श्री दिनेश निषाद – प्रधान रानाहडीह

- किसानों को बीज के साथ – साथ खाद एवं दवाएं भी दी जाय अगर कृषकों के लिए स्टोर की व्यवस्था हो सके जिससे कृषकों को एक ही जगह से सारा सामन आसानी से मिल। यह सुविधा अगर केवीके प्रदान कर दे तो कृषकों को फायदा होगा।

12. श्रीमती ममता देवी (महिला कृषक)

- श्रीमती ममता देवी ने कहा कि उन्हें ट्रेनिंग करने व ग्रुप बनाने के बाद भी आय का कोई स्रोत नही मिल रहा है । कोई ऐसा कार्य किया जाय जिससे वे स्वयं सहायता समूह से आय कमा सकें ।
- श्रीमती ममता देवी ने रोजगार परक प्रशिक्षण की मांग की ।